E-ISSN No : 2581-6195 | Volume : 9 | Special Issue | Aug 2026

भारतीय ज्ञान परम्परा में स्त्री दर्शन और समकालीन हिंदी साहित्य में स्त्री अस्मिता

वंदना

Access Online

Article DOI:
10.5281/zenodo.22763321

ABSTRACT

भारतीय ज्ञान परंपरा में स्त्री को केवल परिवार अथवा समाज की एक इकाई के रूप में नहीं, बल्कि सृष्टि, शक्ति, ज्ञान, संस्कृति तथा नैतिक मूल्यों की आधारशिला के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। वैदिक साहित्य में स्त्री को पुरुष के समकक्ष ज्ञानार्जन,यज्ञ, दर्शन और समाजिक निर्णयों में सहभागी माना गया, जबकि उत्तर वैदिक एवं मध्यकालीन परिस्थितियों में उसकी समाजिक स्थिति क्रमशरू सीमित होती गई।आधुनिक काल में शिक्षा, लोकतांत्रिक चेतना, सामाजिक सुधार आंदोलनों तथा स्त्री–विमर्श के प्रभाव से स्त्री–अस्मिता का प्रश्न साहित्य और समाज के केंद्र में स्थापित हुआ।

प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित स्त्री–दर्शन तथा समकालीन हिंदी साहित्य में अभिव्यक्त स्त्री–अस्मिता का विश्लेषणात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन करना है। इस अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया है कि समकालीन हिंदी साहित्य स्त्री को केवल शोषण और संघर्ष की प्रतीक के रूप में नहीं, बल्कि आत्मनिर्णय, समानता, स्वाभिमान, स्वतंत्रता और सामाजिक परिवर्तन की सक्रिय वाहक के रूप में प्रस्तुत करता है। साथ ही यह भी प्रतिपादित किया गया है कि भारतीय ज्ञान परंपरा के मानवीय एवं समतामूलक आदर्श आज भी स्त्री–अस्मिता के विमर्श को वैचारिक आधार प्रदान करते हैं। अध्ययन का निष्कर्ष यह है कि समकालीन हिंदी साहित्य भारतीय सांस्कृतिक परंपरा का पुनर्पाठ करते हुए स्त्री की गरिमा, समान अधिकार और स्वतंत्र व्यक्तित्व की स्थापना की दिशा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है तथा एक न्यायपूर्ण एवं समावेशी समाज के निर्माण का मार्ग प्रशस्त करता है।

KEYWORDS: भारतीय ज्ञान परंपरा, स्त्री दर्शन, स्त्री अस्मिता, समकालीन हिंदी साहित्य, नारी विमर्श, भारतीय दर्शन

रिसर्च स्कॉलर, हिंदी विभाग, फोनिक्स यूनिवर्सिटी, रुड़की

How to Cite:
वंदना (2026), भारतीय ज्ञान परम्परा में स्त्री दर्शन और समकालीन हिंदी साहित्य में स्त्री अस्मिता, International Educational Journal of Science & Engineering (IEJSE),Vol: 9, Special Issue, Aug 2026 50-52

प्रस्तावना

भारतीय ज्ञान परंपरा पर प्रकाश डालें तो ज्ञात होता है कि हजारों वर्ष पुरानी है जिसमें वह उपनिषद पुराण स्मृतियां आदि निहित है इन ग्रंथो का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि स्त्री को कभी देवी शक्ति और प्रकृति के रूप में प्रतिशत किया गया है तो कहीं उसे पितृसात्मक समाज के अधीन रखा गया।

यद्यपि भारतीय परम्परा में स्त्री को अत्यंत सम्मानजनक स्थान प्रदान किया गया है। तथापि सामाजिक व्यवहार में अनेक कालखंडों में उसकी स्वतंत्रता सीमित होती चली गई। आधुनिक काल में शिक्षा, सामाजिक सुधार आन्दोलनों तथा लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रभाव से स्त्री ने अपनी अस्मिता, अधिकार और समानता के प्रश्न को प्रमुखता से उठाया है। नारी की मनोदशा का वर्णन करते हुए उमा चक्रवर्ती ने कहा है विश्व के अधिकतर हिस्सों में दर्ज इतिहास की अधिकांश अवस्था में स्त्री पराधीनता का वजूद रहा है। लेकिन इस पराधीनता की हद और स्वरूप का निर्धारण सामाजिक आर्थिक और सांस्कृतिक कारक करते रहे हैं । दूसरे शब्दों में स्त्री का परिवेश उसकी पराधीनता की प्रवृत्ति को तय करता है

समकालीन हिंदी साहित्य में स्त्री अस्मिता की बात की जाए तो आज की स्थिति अपनी पहचान एस्वतंत्रता और अधिकारों के लिए संघर्षरत है। जिसे साहित्य में अभिव्यक्त भी किया गया है। समकालीन हिंदी साहित्य में नारी अस्मिता पर बात करने से पूर्व हमें भारतीय ज्ञान परंपरा में स्त्री दर्शन पर दृष्टि डालना आवश्यक है। जो इस प्रकार से है –

Research Paper

Copyright© 2026, IEJSE. This open-access article is published under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License which permits Share (copy and redistribute the material in any medium or format) and Adapt (remix, transform, and build upon the material) under the Attribution-NonCommercial terms.

भारतीय ज्ञान परंपरा में स्त्रीदर्शन

वैदिक काल – वैदिक काल में स्त्रियों को उच्च स्थान प्राप्त था। उन्हें ज्ञान शक्ति और सृजन का प्रतीक माना गया । स्त्रियां शिक्षा प्राप्त कर वैदिक मंत्रों की रचना में निपुण थीं। जिससे भारतीय दर्शन समृद्ध हुआ।

पौराणिक काल – पौराणिक काल में स्त्री को देवी के रूप में सर्वोच्च स्थान प्रदान किया गया है । किन्तु सामाजिक जीवन में पितृसत्तात्मक व्यवस्था के फलस्वरूप उसकी स्वतंत्रता सीमित होती चली गई और स्त्रियों को आदर्श रूप में त्याग सेवा और समर्पण के रूप में परिकल्पना की जाने लगी।

भक्तिकाल – भक्ति काल में स्त्री को एक नवीन अभिव्यक्ति प्राप्त हुई। मीराबाई जैसी सगुण भक्ति की उपासक कवयित्री ने व्यक्तिगत स्वतंत्रता और भक्ति के माध्यम से सामाजिक बंधनों को तोड़ने का प्रयास कर स्त्री स्वतंत्रता पर बल दिया ।

तुलसी की चौपाई नारी जीवन की सारी पीड़ा सारी व्यथा का आसवित रूप है .

कत विधि सृजी नारि जंग मांही
पराधीन सपनेहुं सुख नाहीं। (रामचरितमानस)

इसके अतिरिक्त विश्वनाथ त्रिपाठी स्त्री के मौलिक अधिकारों के आनंद पर उन्हें चुटकुला व्यंग्य करते हुए कहते हैं।

लोक कुल काण जगत की, दइ बहाय जस पाणी।
अपने घर का पर्दा करले, मैं अबला बौराणी।।

उपनिषद् में स्त्री का स्वरूप – उपनिषद में स्त्री को केवल गृहस्थ जीवन तक सीमित नहीं रखा गया वरन भारतीय ज्ञान परंपरा के अंतर्गत स्त्री की बौद्धिक क्षमता को स्वीकार किया गया क्योंकि वह दार्शनिक चिंतन में भी सहभागिता निभाती थी। पुरुष और स्त्री जिनको उपनिषदों में एक ही तेज की दो ज्योति माना है। सृष्टि के मूल है लेकिन एक का दूसरे के लिए अपेक्षा का भाव वेदना को जन्म देता है जिसमें उसकी दीनता स्पष्ट दिखाई देती है। स्त्री की घनीभूत पीड़ा जब द्रवित होती है तो कविता के स्वर फूट पड़ते हैं .

इन ललचाई पलकों पर पहरा था जब बीड़ा का
साम्राज्य मुझे दे डाला उस चितवन में पीड़ का य (नीहार से)

समकालीन हिंदी साहित्य में स्त्री अस्मिता – स्त्री अस्मिता की अवधारणा केवल अपनी पहचान, आत्मनिर्णय का अधिकार, सामाजिक और मानसिक स्वतंत्रता से ही नहीं है वरन यह पितृसत्तात्मक के विरुद्ध प्रतिरोध के रूप में भी दिखाई देती है। आधुनिक लेखिकाओं ने स्त्री जीवन के उन अनुभवों को अभिव्यक्ति दी है जिन्हें लम्बे समय तक साहित्य में उपेक्षित रखा गया।

महादेवी वर्मा – महादेवी वर्मा ने अपनी प्रसिद्ध रचना "श्रंखला की कड़ियां" मे स्त्रियों की समाजिक स्थिति, पीड़ा संवेदना और आत्म सम्मान का अत्यंत मार्मिक चित्रण किया है। उन्होंने नारी मुक्ति के साथ साथ सामाजिक, मानसिक व आध्यात्मिक मुक्ति पर भी बल दिया है। वे कहती हैं।

विस्तृत नभ का कोई कोना
मेरा ना कभी अपना होना
परिचय इतना इतिहास यही
उम्मीद कल थी मिट आज चली (संध्या गीत से)

मन्नू भंडारी – मन्नू भंडारी ने आपका बंटी, रचना के माध्यम से मध्यवर्गीय पारिवारिक विघटन, वैवाहिक विधटन और स्त्री के संघर्षमय जीवन के चित्र अंकित किए हैं। उनकी रचनाओं में स्त्री को निर्णय लेने के साथ.साथ साहसी भी दिखाया गया है।

कृष्णा सोबती – कृष्णा सोबती ने मित्रों मरजानी, में स्त्री की इच्छाओं, स्वतंत्रता के साथ.साथ स्त्री देह तथा सामाजिक कुरीतियां से मुक्ति पर प्रकाश डाला है। कृष्णा सोबती हिंदी साहित्य में स्त्री अस्मिता की महत्वपूर्ण उपलब्धि मानी जाती है। अनामिका .अनामिका के कथा साहित्य में स्त्री का बहु आयामी चित्रण हमारे सामने आता है। उनके साहित्य में स्त्री केवल पीड़ित ही नही विचारशीलए संघर्षशीलए आत्मनिर्भर तथा परिवर्तन की चाह रखने वाली है। वे भारतीय संस्कृति परम्परा और आधुनिक स्त्री विमर्श के बीच संतुलित संवाद रखती है। यह समकालीन नारी विमर्श की प्रमुख आवाज है।

स्त्री अस्मिता प्रमुख आयाम

सामाजिक अस्मिता – समाजिक अस्मिता समाज में समान अधिकार के पक्ष में थी। आर्थिक अस्मिता आत्मनिर्भरता चाहती थी ।

मानसिक अस्मिता. आत्म सम्मान और स्वतंत्रता चाहती थी ।

सांस्कृतिक अस्मिता. परंपराओं का पुनः पाठ है।

समकालीन साहित्य में नारी स्वर और स्वतंत्र अस्तित्व के मुख्य पहलू

1. स्वतंत्र अस्तित्व की कल्पना
2. आत्मनिर्भर बनने की कामना
3. पितृसत्ता का विरोध
4. मनोवैज्ञानिक चित्रण
5. आर्थिक स्वतंत्रता

इसके अतिरिक्त समकालीन साहित्य में समाज सुधार और समकालीन कवियों के भाव दर्शन में विमर्श मूलक साहित्य, यथार्थ वाद, महिला सशक्तिकरण, पर्यावरण के प्रति जागरूकता, आर्थिक जागरूकता, स्वतंत्रता की लालसा, अन्याय और शोषण के विरुद्ध स्वर, प्रेम के नवीन स्वरूप के दर्शन भी होते हैं।

समकालीन परिपेक्ष में पुनः पाठ समय की मांग के अनुरूप आज –

- भारतीय ज्ञान परंपरा में पूर्ण मूल्यांकन किया जाना चाहिए।
- स्त्री को देवी नहीं मानवीय रूप में देखा जाए ।
- साहित्य के माध्यम से स्त्री की वास्तविक स्थिति को समझा जाए ।
- समकालीन लेखिकाएं इस दिशा में कार्य कर रही हैं ।

निष्कर्ष

भारतीय ज्ञान परंपरा में स्त्री को उच्च स्थान है। व्यवहारिक जीवन में बंधन में जकड़ी हुई है ।जबकि समकालीन हिंदी साहित्य में इन सपनों को तोड़ने का प्रधान में पहचान पहचान स्त्री ही है इस प्रकार कहा जा सकता है कि आधुनिक हिंदी साहित्य भारतीय दर्शन की परंपराओं का पुनर्गठन करते हुए स्त्री अस्तित्व में नए आयाम प्राप्त करने का प्रयास करता है।

समकालीन कवियों ने समाज में जागरूकता लाने समानता लाने विसंगतियों का उद्घाटन करने एवं यथार्थवादी दृष्टिकोण आदि सभी पर अपनी पैनी दृष्टि डाली जो समकालीन कवियों की काव्य की महत्वपूर्ण विशेषता है। अतः कहा जा सकता है कि आधुनिक समाज महिलाओं की स्थिति को प्रकट करने के साथ.साथ संवेदनाओंए संघर्ष ए विचारों को साहित्य के माध्यम से सामने लाता है और महिला अधिकारों और उनकी स्वतंत्रता की प्रति जागरूकता को बढ़ाता है। हिंदी साहित्य में

इसकी स्त्री विमर्श की प्रवृत्ति निरंतर विकसित हो रही है। जो वर्तमान में स्त्री सशक्तिकरण की दिशा में और भविष्य में स्त्री सशक्तिकरण की दिशा में और अधिक प्रभावी सिद्ध होगी।

संदर्भ सूची

1. डॉ उमा चक्रवर्ती, जाति समाज में पितृसत्ता, अनुवादक विजय कुमार झा
2. विश्वनाथ त्रिपाठी. मीरा का काव्य, वाणी प्रकाशन, दिल्ली प्रथम संस्करण 1989
3. रामचरितमानस, गोस्वामी तुलसीदास, गीता प्रेस
4. मन्नू भंडारी आपका बंटी राधा कृष्ण प्रकाशन
5. महादेवी वर्मा श्रृंखला की कड़ियां लोकभारती प्रकाशन